चित्रकूट 26 जनवरी 2011। श्री सद्गुरु सेवा संघ ट्रस्ट द्वारा 62 वॉ गणतंत्र दिवस विद्याधाम उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के प्रांगण में देशभक्ति से ओतप्रोत होकर धूमधाम व हर्षोल्लास के साथ मनाया गया । हजारों की संख्या में स्कूल के बच्चों ने लगभग 1 कि0मी0 की लम्बी कतार मे प्रभातफेरी तिरंगे झण्डे, राष्ट्रीय नारे एवं बैण्ड बाजे के साथ निकालकर सुबह 8.30 बजें स्कूल के प्रांगण में जमा हुए । ट्रस्ट के प्रशासनिक ट्रस्टी श्री रामभाई गोकानी ने सुबह 9.15 बजे ध्वजारोहण किया। सद्गुरु सेवा संघ ट्रस्ट के ट्रस्टी डा0 बी0के0जैन ने मार्चफास्ट की सलामी ली। श्री रामभाई ने अपने उद्बोधन में कहा कि बच्चे देश का भविष्य है हम इन्हे अच्छी शिक्षा देंगे तो ये अच्छा कार्य करेंगे और देश प्रगति की ओर बढेगा। जातिवाद एवं भृष्टाचार को मिटाकर हमें अपने कर्म पर ध्यान देना है यही हमारा कर्तब्य है। महात्मा गॉधी, जवाहर लाल नेहरू, चन्द्रशेखर आजाद, भगत सिंह जैसे देश भक्त सपूतों के आदर्श की प्रेरणा लेनी चाहिए । डा0 बी.के.जैन ने 62 वे गणतंत्र दिवस पर अपने उद्बोधन में कहा कि इन 62 वर्षों में हमने बहुत कुछ पाया है। वे लोग धन्य हैं जिन्होने स्वतंत्रता के बाद जन्म लिया, खुला आसमान मिला, स्वतंत्र सांसे मिली हैं। उन्होने कहा कि प्रश्न यह नहीं है कि हमें क्या मिला प्रश्न यह है कि हमने देश को क्या दिया । आज भृष्टाचार, आतंकवाद, सीमावाद, परिवाद, जातिवाद प्रान्तवाद देश को कमजोर कर रहा है यह कहॉ से आया, क्यों आया यह भी विचारणीय है। पूर्व राष्ट्रपति डा0 अब्दुल कलाम से इसी सद्गुरु परिसर में एक बच्चे ने प्रश्न किया कि भृष्टाचार कैसे मिटेगा। उनका सीधा जवाब था कि आप से, आपसे आपके घर से, आपके घर से आपके समाज से और आपके समाज से आपके देश से भृष्टाचार पूरी तरह मिट जायेगा । यदि देश का हर नागरिक अपना कार्य पूरी निष्ठा एवं ईमानदारी से करे। आज देश को जितना खतरा बाहर से है उससे ज्यादा खतरा देश के अन्दर से भी है । जातिवाद, प्रान्तवाद, सीमावाद और आतंकवाद देश के विकास में रुकावट पैदा करते हैं। आज हम सबको मिलकर इसे दूर करने का संकल्प लेना है। देश का भविष्य आज की युवा पीढी के कन्धों पर निर्भर है ये कंधे जितने शक्तिशाली होगे देश भी उतना शक्तिशाली बनेगा। डा0 जैन से सभी शहीदों को श्रद्वांजली देते हुए उनके पदचिन्हों पर चलने को कहा । गणतंत्र दिवस के इस शुभ अवसर पर सद्गुरु पब्लिक स्कूल, विद्याधाम उ0मा0 विद्यालय, विद्याधाम पूर्व मा0 विद्यालय, श्री रामसंस्कृत विद्यालय, श्री सद्गुरु नर्सिंग स्कूल, सद्गुरु कम्प्यूटर स्कूल, सद्गुरु पैरामेडिकल के छात्र–छात्राओं ने भाग लिया। स्कूल के छोटे–छोटे बच्चों द्वारा भाषण, गीत एवं खेलकूद भी प्रस्तुत किये गये। सद्गुरु पब्लिक स्कूल एवं विद्याधाम उ0 मा0 विद्यालय के 6 बच्चों और उनके स्काउट शिक्षक रामगोपाल विश्वकर्मा को श्री रामभाई गोकानी एवं डा0 जैन द्वारा पुरस्कृत किया गया जिन्होने प्रान्तीय स्तर पर स्काउट सम्मेलन में स्वर्ण पदक एवं रजत पदक प्राप्त कर विद्यालय का नाम रोशन किया है। अन्त में राष्ट्रीय नारों के जयकारों से आसमान गूॅज उठा। जय भारत जय हिन्द के घोष ने सभी का मन मोहा।

राजेन्द्र मिश्र
जानकीकुण्ड, चित्रकूट

jkekuUnkpk;Z t;arh

fp=dwV 26 tuojhA Hkkjrh; laLd`fr ds j{kd vuar foHkwf"kr txn~x# Lokeh jkekuUnkpk;Z th dh t;arh cMs /ke/kke ls j?kqohj efnj VwLV cMh xqQk tkudhdq.M esa euk;h x;hA ikr% Lokeh th dh iwtk vpZuk vkpk;Z jkedj.k 'kkL=h us djk;hA Hkkjrh; laLd`fr ds laj{kd Lokeh Jh jkekuUnkpk;Z dh >kadh ltkdj gtkjksa dh la[;k esa lar&egar] Nk= ,oa x.kekU; ukxfjdksa us iHkkr Qsjh fudkydj ykxksa esa mudsa vkn'kksa dks tu&tu rd igqpkus dk i;kl fd;kA lxk"Bh dks lacksf/kr djrs gq, Jh j?kqohj efnj VwLV ds izcU/kd MkO chOdsO tSu us dgk fd Lokeh th dk tUe mll le; gqvk tc dqjhfr;ka] u'khlrk ,oa vR;kpkj dk ;qx py jgk FkkA fgUnqvksa dks thou n;uh; gks x;k Fkk] tcju /keZ ifjorZu djk;k tk jgk FkkA Hkkjr dh vkRek djkg jgh Fkh mlh le; ek?k d".k i{k dh lIreh ds fnu iz;kx esa ifMr iq.;lnu 'kekZ ds ?kj Jherh lq'khyk ds mnj ls jke ds :Ik esa Jh jkekuUnkpk;Z th us tUe fy;kA vkt Hkh gekjk ns'k tkfrokn] Hk"Vkpk;] vkradokn] vyxkookn dk f'kdkj gks jgk gSA iqu% ;qx i#"k Lokeh jkekuUnkpk;Z tSls O;fDr ds vorkj ysus dh vko';drk gSA Lokeh th us Lo;a jke ds :Ik esa bl /kjrh ij vorkj fy;k FkkA mUgh dh otg ls gekjh fgUnw laLd`fr dh j{kk gq;hA vkt Hkh ;fn bls cpkuk gS rks jkekuUnkpk;Z ds vkn'kksa dks u Hkwyk,A fuokZ.kh v[kkMk ds egar Jh jkeniykjs nkl us Lokeh th ds HkfDr ekxZ ij pyus dk vkgokgu fd;kA fnxEcj v[kkMk ds egar Jh 'k=qgu nkl us lar lekt ij [kn O;Dr djrs gq, iqu% e/;dkyhu ;qx dk Lej.k djk;kA MkO dk'kyUnz nkl jkek;.kh us Lokeh th ds thou vkn'kksa dks tu&tu rd igqpkus dh ckr dghA egar Jh jkefd'kksjnkl NkVk jke/kke us Hkh tkfrikfr NkMdj HkfDr ij cy fn;kA egar Jh jktUnz nkl eky/kkjh vkJe us fodfr lekt dks ,drk esa ck/kus dh ckr ij tksj fn;kA ekul dkfdy iO d".k irki frokjh us Lokeh jkekuUnkpk;Z ds vkn'kksa ij pyus dh ckr dghA blh izdkj cgqr ls ykxksa us t;arh lekjkg ij Lokeh th ds vkn'kksa dh ckr dgdj tu&tkxj.k dh ckr ij cy fn;kA bl lekjkg esa gtkjksa dh la[;k esa lar] egar ,oa x.kekU; O;fDr mifLFkr jgsA

jktsUnz feJ
tkudhdq.M] fp=dwV